# पीजी डिप्लोमा इन छत्तीसगढ़ी भाषा और साहित्य

## प्रश्न पत्र - द्वितीय

# छत्तीसगढ़ी लोक साहित्य

## Course Code : PGDCLL-02

पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़, बिलासपुर
कोनी-बिरकोना पहुँच मार्ग, ग्राम पोस्ट बिरकोना, बिलासपुर
फोन : 07752-240712
Web site : http://www.pssou.ac.in
E-mail: vcpssou@rediffmail.com, vc@pssou.ac.in, registrar@pssou.ac.in, info@pssou.ac.in

VERIFIED
REGISTRAR
Pt. Sunderlal Sharma (Open)
University Chhattisgarh
BILASPUR (C.G.)

Shri Resham Lal Pradhan
Incharge NAAC Criteria
PSSOU, CG Bilaspur

# अनुक्रमणिका


- छत्तीसगढ़ी लोकसाहित्य : अध्ययन की आवश्यकता और महत्व
- छत्तीसगढ़ी लोकसाहित्य
  1. छत्तीसगढ़ी लोकगीत
  2. छत्तीसगढ़ी लोकगाथा
  3. लोककथा
  4. लोकनाट्य
  5. लोकसुभाषित
- सहायक पुस्तकें


Shri Resham Lal Pradhan
Incharge NAAC Criteria-VII
PSSOU, CG Bilaspur

VERIFIED

REGISTRAR
Pt. Sunderlal Sharma (Open)
University Chhattisgarh
BILASPUR (C.G.)

**मंडवा सजना-** आँगन में मण्डप स्थापित कर कलश सजाते हैं। इस अवसर पर गीत गाते हैं-

सरई सौगोना के दाई मड़वा छवाई ले
वही सिरिस, वही खाम।
सीता ल बिहावय राजाराम।।
नदिया के तिर तिर दाई पड़की परेवना
पड़की न चुनी चुनी खाय
कि अये मोर दाई सीता ला बिहावय ......

**NOTES**

**बरात निकासी-** वर को सजाकर विवाह हेतु कन्या घर भेजने की इस मांगलिक बेला में माँ, बुआ आदि 'परछन' करती हैं, मौर सौपती हैं। इस अवसर पर वर के मनोभाव को व्यक्त करने के लिए ये गीत गाते हैं-

दे तो देतो दाई अस्सी वो रूपैया
के सुन्दरी ल लानितेंव बिहाये
के अओ दाई सुन्दर कइना लातेंव बिहाये
तोर बर लानिहँव मैं रंधनी-परोसनी
अउ मोर बर घर के सिंगार
के अओ दाई सुन्दर कइना लानतेंव बिहाये।

**परघनी-** वर के तथा बारातियों का स्वागत कन्या पक्ष की ओर से किया जाता है, समधी भेंट होता, इस अवसर पर स्त्रियाँ गाती हैं-

अइसन के समधी ल घेरी-बेरी बरजेंव
मै घेरि-बेरी बरजेंव के छेना बीने लइन कहिबे
मोर ददा छेना बीने लझन कहिबे।
सब पारा जइबे, किंदरि फिरि अइबे,
किंदरी फिरी अइबे
के गहिरा पारा झन जाबे मोर सगा
गहिरा टूरा ह छप्पन राखे मोहिनी
के मोहिनी म राखे लुकाये समधिन ला मोहिनी म राखे लुकाये।

**मड़वानी-** (भड़ौनी) विवाह में बारात भोजन के अवसर पर मड़वानी गई जाती है। प्रेम मिश्रित हास-परिहास भरी इन गारी गीतों लोकड़हिन की ओर रहता है-

बने बने तोल जानेंव समधी
मड़वा में डारेंव बास रे
झालापाला लुगर लाने
जरय तुँहर नाक रे (समधी के लिए)

VERIFIED
REGISTRAR
Pt. Sunderlal Sharma (Open)
University Chhattisgarh
BILASPUR (C.G.)
Shri Resham Lal Prasad
Incharge NAAC Criteria
PSSOU, CG Bilaspur

NOTES

बराँ खाहूँ कहिथवँ समधिन
कहाँ के बरा पाबे रे
दमरू हावय दफड़ा हावय
ओला हम बजवाबो रे
हमर समधिन दारी ला
बजनियाँ संग नचवाबो रे। (समधिन के लिए)

सुन्दर हवय कहिके दुलरवा
हमला दियेव दगा रे
बिलवा हावय मुँहू तुँहूर
नोंहव हमर सगा रे। (दूल्हा के लिए)

दुल्ही डौकी के दाई ल लुगरा के साध हे
ओ लुगरा के साध हे
कि गए होही कोसटा दुकाने
भौजी हर गए होंही कोसटा दुकाने
औते बने बने लुगरा निमारथे भौजी हर
बने बने लुगरा निमारथे
ओला लाज समर नइतो लागे
भउजी हर चढ़े हवे कोसटा दुकाने।

**भाँवर-** विवाह संस्कार का यह सर्वाधिक महत्वपूर्ण भाग है भाँवर। वर और कन्या के सात फेरे के अवसर पर गाते हैं-

मधुरि-मधुरि पग सारव हो दुलह बाबू
तुम्हर दुल्ही के अंग झन डोलय हो।
मधुरि-मधुरि पग सारव हो दुल्ही नोनी
तुम्हर रजवा के अंग झन डोलय हो।।
सुरहिन गैया के गोबर मंगाई ले वो
वो तो खुँट धरि अँगना लिपाय हो।
अगरि चाऊँर दाई बगरि पिसाने वो
वो तो मोतियन चौक पुराय हो.........

**गठबंधन-** विवाह मंडप में दूल्हा-दूल्हन का जब गठबंधन किया जाता है तब उनके लिए मंगल कामनाएँ व्यक्त की जाती हैं कि यह गठबंधन जीवन भर न टूटे-

जनम जनम गाँठ जोड़वे ये दोसी
जनमे जनम गाँठ जोड़बे



VERIFIED
REGISTRAR
Pt. Sunderlal Sharma (Open)
University Chhattisgarh
BILASPUR (C.G.)
Shri Resham Lal Pradh...
Incharge NAAC Criter...
PSSOU, CG Bilaspur